

रूसी क्रांति का दर्पण : लियो तॉलस्तॉय

वी.आई.लेनिन

इस महान लेखक का नाम उस क्रांति के साथ जोड़ना जिसे, जैसा कि जाहिर है, वह समझता नहीं था और जिससे दूर ही वह रहता था, पहली नजर में अद्भुत और बनावटी मालूम पड़ सकता है। निसंदेह कोई भी वस्तु अगर किसी प्रक्रिया की ठीक-ठीक प्रतिच्छाया नहीं देती, तो उसे हम दर्पण नहीं कह सकते? लेकिन हमारी क्रांति स्वयं एक असाधारण और उलझी हुई प्रक्रिया है। इस क्रांति में सीधे काम करने वालों और उसमें भाग लेने वालों में बहुत से सामाजिक लोग हैं जो यह नहीं समझते कि क्या हो रहा है और उन्होंने उन ऐतिहासिक कार्यों को भी छोड़ दिया है; जिनको घटनाओं ने उनके सामने ला रखा है। और एक सत्यमेव महान लेखक क्रांति के जरूरी रूपों की प्रतिच्छाया दिये बिना नहीं रह सकता।

कानूनी रूसी प्रेस, जो कि तॉलस्तॉय के अस्सीवें वर्षगांठ पर लेखों, पत्रों और नोटों से भरा हुआ था, रूसी क्रांति की रूप-रेखा और उसकी प्रणेता शक्तियों के विश्लेषण में दिलचस्पी नहीं रखता। सारा का सारा प्रेस घृणित ढोंग से भरा पड़ा है - यह ढोंग दो प्रकार का है - 'सरकारी' और 'उदार'। पहला तो किराए के लेखकों का कुघड़ ढोंग है जो कि कल तक तॉलस्तॉय पर हमले करने पर तुला था और जो आज तॉलस्तॉय में देशभक्ति खोज निकालने पर तुला हुआ है और युरोप की नजरों में औचित्य के सभी नियमों को उसके प्रति पालने में लगा हुआ है। हर आदमी जानता है कि इन लेखकों को पैसे मिले हैं और ये किसी को धोखा नहीं दे सकते। लेकिन यह उदारवादी ढोंग बहुत अधिक पैना है और इसलिये बहुत अधिक नुकसान पहुंचाने वाला और खतरनाक है। रेख के कैडेट वालालायकिन्स की बात सुनकर यह धारणा उत्पन्न हो सकती है कि तॉलस्तॉय के लिए उनकी सहानुभूति जोरदार और पूर्ण है। सचमुच में 'इस महान ईश्वर अन्वेषक' के बारे में उनके सोचे-विचारे भाषण और बड़े-बड़े वाक्यांश बिल्कुल ढोंग से भरे हैं क्योंकि रूस का उदारपंथी न तो तॉलस्तॉयवादी ईश्वर में विश्वास करता है और न तो मौजूदा व्यवस्था की तॉलस्तॉयवादी आलोचना के साथ सहानुभूति रखता है। वह अपने को एक प्रचलित नाम के साथ इसलिये शामिल करता है कि उसकी राजनैतिक पूंजी बड़े - वह राष्ट्रीय विरोध के नेता का रोल अदा कर सके। वह कोशिश करता है कि जोशीले और जोरदार जुमलों के नीचे इस प्रश्न के सीधे और स्पष्ट उत्तर को दबा दे कि तालस्तायवाद में ये स्पष्ट असंगतियां कैसे पैदा होती हैं। उनमें हमारी क्रांति की किन कमियों और कमजोरियों की छाया मिलती है? तालस्तायवादी स्कूल की कृतियों, विचारों और शिक्षाओं की असंगतियां सचमुच अत्यंत स्पष्ट असंगतियां हैं।

एक तरफ वह महान लेखक है जो कि रूसी जीवन का अद्वितीय चित्र ही उपस्थित नहीं करता बल्कि पहले दर्जे का विश्व साहित्य पैदा करता है। दूसरे तरफ वह जमींदार है जो ईसा मसीह के नाम पर शहीद का ताज पहने हुए है।

एक तरफ - सामाजिक झूठों और ढोंगों का अत्यंत मजबूत, सीधा और सच्चा विरोध है। दूसरी तरफ तॉलस्तॉयवादी अर्थात् निष्प्राण, पागलपन की सीमा तक पहुंचा हुआ, गरीबी के नारे लगाने वाला रूसी बुद्धिजीवी है जो कि आम लोगों के सामने अपनी छाती पीट-पीट कर कहता है "मैं बुरा हूं, मैं गंदा हूं, परंतु मैं नैतिक आत्मशुद्धि के लिये यत्नशील हूं; अब मैं गोश्त नहीं खाता, अब मैं चावल के कटलेट ही खाकर रह जाता हूं।"

एक तरफ पूंजीवादी शोषण की घोर आलोचना है, सरकारी हिंसा, न्याय के नाटक और सरकारी व्यवस्था का भंडा फोड़ है; धन की बढ़ती और सभ्यता की सफलताओं और गरीबी की बढ़ती श्रमजीवी जनता पर जुल्म और

ज्यादती के बीच की असंगतियों की गहराई का उद्घाटन करना है; दूसरी तरफ 'बुराइयों के अविरोध' की पागलपन से भरी हुई शिक्षा है। एक तरफ गंभीरतम तथ्यवाद है, और हर तरह के पदों का उद्घाटन है, दूसरी तरफ संसार में मौजूद सबसे घृणित वस्तु धर्म की वकालत है, सरकारी पुरोहितों के स्थान पर आचार और नीति में विश्वास रखने वाले पुरोहितों को ला बिठाना है अर्थात् इस प्रकार सबसे पैना और इसलिये सबसे कर्षित प्रकार का पुरोहितवाद है।

सत्य में,
तुम गरीब हो, तुम समृद्धिशालिनी हो,
तुम शक्तिशालिनी हो, तुम असहाय हो,
मां रूस *

इन असंगतियों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि तॉलस्तॉय न तो मजदूरों का आन्दोलन और न समाजवाद के लिये संघर्ष में उसके रोल को समझ सका, न रूसी क्रांति को। लेकिन तॉलस्तॉय की शिक्षाओं और विचारों की ये असंगतियां आकस्मिक नहीं है, यह उन्नीसवीं सदी की अंतिम तिहाई में रूसी जीवन की असंगतियों की अभिव्यंजना है। पितृसत्तावादी गांव जो कि अभी-अभी गुलामी से मुक्त हुए थे, पूंजी और राज्य के हाथों में हिंसा और लूट के लिये दे दिये गए। किसान अर्थ-व्यवस्था और किसान जीवन की पुरानी नींव जिसने अपने को सचमुच सदियों तक जीवित रखा था, असाधारण गति से टूट गई। और, तॉलस्तॉयवादी विचारों की असंगतियों का मूल्यांकन आज के मजदूर आंदोलन और आज के समाजवाद के दृष्टिकोण से नहीं करना चाहिए (ऐसा मूल्यांकन, निसंदेह आवश्यक है परन्तु इतना ही सब कुछ नहीं है) बल्कि इसका मूल्यांकन उस विरोध के दृष्टिकोण से करना चाहिए जो कि पितृसत्तावादी गांवों की ओर से पूंजीवाद के हमले के खिलाफ उठा, जो कि जनता की बर्बादी और जमीन पर से उनकी बेदखली के खिलाफ उठा। मानवों की मुक्ति के लिये नुस्खे खोज निकालने वाला पैगम्बर तॉलस्तॉय हास्यास्पद हो गया है - इसलिये वे रूसी और विदेशी 'तॉलस्तॉयवादी' जो कि उसकी शिक्षा के इस सबसे कमजोर पक्ष को रुढ़िवाद बना देना चाहते हैं, नितांत घृणित हैं।

तॉलस्तॉय महान है क्योंकि उसकी कृतियों में रूस में पूंजीवादी क्रांति के बढ़ने के साथ करोड़ों रूसी किसान जनता में उठने वाले विचारों और भावों की अभिव्यंजना है; तॉलस्तॉय मौलिक है क्योंकि उसके विचार कुल मिलाकर क्षति पहुंचाने वाले होते हुए भी, अपने इसी कुल जोड़ से हमारी क्रांति - किसान-पूंजीवादी क्रांति की विशिष्टताओं को ठीक-ठीक बताते हैं। ऐसा समझ लेने पर पता चलता है कि तालस्ताय के विचारों की असंगतियां उन

* नेक्रासोव की कविता Who Lives Well in Russia से उद्धृत

असंगतिपूर्ण ऐतिहासिक दशाओं की छाया हैं, जिनमें हमारी क्रांति में शामिल होने वाले किसानों के कार्य बंधे हुए थे। एक तरफ सदियों के सामंतवादी जुल्मों और दशाब्दियों के उत्तर-सुधारकाल की तेजी से बढ़ती हुई बरबादियों ने घृणा, क्रोध और निश्चयात्मक दृढ़ता के अंबार लगा दिये थे। सरकारी चर्च, जमींदार और जमींदारी सरकार को बहा ले जाने वाले प्रयत्न - जमीन की मिल्कियत के सभी पुराने रूपों और व्यवस्थाओं को समाप्त करने - जमीन को आजाद कराने - पुलिस श्रेणी की सरकार के स्थान पर छोटे किसानों के स्वतंत्र और बराबरी के आधार पर बनी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के प्रयत्न, हमारी क्रांति में किसानों द्वारा बढ़ाए हुए प्रत्येक ऐतिहासिक कदम में एक डोरी की तरह है और निश्चय ही तॉलस्तॉय के लेखों के सिद्धांत संबंधी विषय कोरे 'ईसाई अराजकतावाद' से जिसको उसके विचार संबंधी दृष्टिकोण से निकालकर एक 'व्यवस्था' का रूप दिया गया है, कहीं ज्यादा अधिक संबंध किसानों के इस संघर्ष से रखते हैं।

दूसरी तरफ सामाजिक जीवन के नए रूप की ओर बढ़ने की कोशिश करते समय किसान जैसा सामाजिक जीवन चाहते हैं उसकी, अपनी आजादी प्राप्त करने के लिये जिस प्रकार के संघर्ष की आवश्यकता है उसकी, इस संघर्ष में जिस प्रकार के नेताओं की आवश्यकता है उसकी, पूंजीवादी और पूंजीवादी बुद्धिजीवी किसान क्रांति के प्रति कैसा रुख रखेंगे उसकी, और क्यों बड़े-बड़े जमींदारों के हाथ से जमीन छीन लेने के लिये जार की शक्ति को क्रांति के द्वारा समाप्त करना एक आवश्यक भूमिका है उसकी, एक बेहद धुंधली पितृसत्तावादी धार्मिक धारणा उनमें थी।

किसानों के सारे पिछले जीवन ने उन्हें जमींदारों और सरकारी अफसरों से घृणा करना सिखाया था, लेकिन उनको यह नहीं बताया था, न बता सकता था कि अपने सवालियों को हल करने के लिये वे जाएं किसके पास। हमारी क्रांति में एक हद तक किसानों की अल्पसंख्या ने ही सचमुच हिस्सा लिया और क्रांति के लिये संगठन किया और अपने शत्रुओं के लिये जारशाही के साथियों और जमींदारों के रक्षकों को खत्म करने के लिये उन किसानों के एक बहुत छोटे से हिस्से ने हथियार उठाया। अधिकतर किसान रोए और प्रार्थनाएं की, नीति की बातें कहीं और सपने देखे, प्रार्थना पत्र लिखे और लियो निकोलाइविख तॉलस्तॉय की भावना के अनुसार ही 'प्रार्थना करने वाले' भेजे!

और, जैसा कि हमेशा ऐसे मामले में होता है राजनीति से तॉलस्तॉयवादी निवृत्ति, राजनीति से तॉलस्तॉयवादी संबंध विच्छेद, राजनीति से उदासीनता और राजनीति की नासमझदारी - इन सबका नतीजा यह हुआ कि केवल एक अल्पमत ने ही सजग क्रांतिकारी सर्वहारा का साथ दिया और बहुसंख्यक किसान बिना किसी सिद्धांत वाले छोटे किस्म के उन पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के चक्कर में फंस गए जो कैडेट होते हुए भी त्रुदोविकों की सभा से भाग

निकले, जिन्होंने समझौता कर लिया और समझौता करने का वादा तब तक करते रहे जब तक कि वे हमेशा के लिये सिपाहियों के बूटों की ठोकर खाकर निकाल नहीं दिये गए।

तॉलस्तॉयवादी विचार, हमारे किसान बगावत की कमजोरियों और कमियों का दर्पण है। वह पितृसत्तावादी गांव की अदृढ़ता और 'कंजूस मजिक' रूसी किसान की स्वभावगत कायरता की प्रतिच्छाया है।

1905-1906 के बागियों का उदाहरण लीजिए; सामाजिक दृष्टि से हमारी क्रांति के ये लड़ाके किसान और सर्वहारा के बीच के थे। चूंकि सर्वहारा अत्यंत अल्पमत में थे, इसलिये फौज के भीतर का आंदोलन रूस भर की पूर्ण एकता के स्तर तक कभी न उठ सका। अथवा उसकी पार्टी श्रेणी सजगता उस तरह की न हो सकी जैसा कि वह सामाजिक प्रजातंत्रवादी होने के बाद हो गई; जैसे किसी ने एक बार हाथ फेर दिया। दूसरी तरफ इससे ज्यादा गलत और दूसरी राय नहीं हो सकती कि बगावत में हार इसलिये हुई कि अफसरों ने उनका नेतृत्व नहीं किया।

इसके उलटे, नरोद्नाया वोल्या के समय से आज तक की क्रांति की महान प्रगति ठीक इस बात में दिखाई पड़ती है कि 'अब उन जानवरों' ने जिनकी आजादी ने उदारपंथी जर्मीदारों और उदारपंथी अफसरों को इतना डरा दिया था, अपने अफसरों के विरुद्ध हथियार उठाए। सिपाही किसानों के हितों से पूरी सहानुभूति रखते थे। जमीन के नाम पर उनकी आंखे चमक उठती थीं। फौज में कितनी बार सिपाहियों ने पेशकदमी की थी - लेकिन इस शक्ति का कोई भी दृढ़ प्रयोग अमल में नहीं लाया गया।

सिपाही हिचकिचाए। कई दिनों बाद - कभी-कभी कई घंटों बाद - एक घृणित सेनापति को मारकर उन्होंने दूसरों को छोड़ दिया, अधिकारियों से समझौते की बातचीत की और चुपके से मौत के घाट उतर गए अथवा कोड़े के आगे अपने शरीर को झुका दिया, जुए में एक बार फिर अपना कंधा झोंक दिया और यह सब हुआ लियो निकोलाइविख तॉलस्तॉयकी भावना के अनुसार!

तॉलस्तॉय में बटुरी हुई घृणा, आधे जीवन के लिये थकी हुई आकांक्षा, बीते को छोड़ फेंकने की इच्छा दिखाई देती है - और साथ ही अपरिपक्वता, स्वप्नवादी चिंतनात्मकता, राजनैतिक अनुभवहीनता और गांवों की क्रांतिकारी अदृढ़ता भी। ऐतिहासिक आर्थिक दशाएं बताती हैं कि जनता के क्रांतिकारी संघर्ष का उभरना अनिवारणीय है। वे यह भी बताती हैं कि संघर्ष के लिये जनता तैयार नहीं है। बुराई के प्रति उस तॉलस्तॉयवादी अविरोध को भी वे बताती हैं जो कि पहले क्रांतिकारी आंदोलनों की असफलता का सबसे मुख्य कारण है।

कहा जाता है कि हारी हुई सेनाएं ही सबसे अधिक सीखती हैं। निश्चय ही, एक क्रांतिकारी श्रेणी और सेना में मुकाबला एक छोटे से हद तक ही किया जा सकता है। पूंजीवाद की विश्रृंखलता उन दशाओं को जिसने कि सामंतवादी जमींदारों और उनकी सरकार के प्रति घृणा के कारण एक हुए करोड़ों किसानों को क्रांतिकारी-प्रजातंत्रवादी संघर्ष में ढकेल दिया, घंटों में बदलती और घंटों में तेज करती है। खुद किसानों के बीच भी विनिमय की उन्नति, बाजार के असर और रुपये की शक्ति पितृसत्तावाद और उसके साथी तॉलस्तॉयवादी विचारधारा को हटाती जा रही है। लेकिन क्रांति के प्रथम वर्षों और जन-क्रांतिकारी संघर्ष की पहली हारों में निश्चय ही एक सफलता मिली। उन्होंने जनता की एक समय की मुलायमियत और अदृढ़ता को मरणांतक आघात पहुंचाया। विलगाव की रेखाएं स्पष्टतर हो गईं। श्रेणियों तथा पार्टियों के लिए सीमाएं निर्धारित हो गईं। स्तोत्रिविन के शिक्षात्मक हथौड़े के नीचे सामाजिक प्रजातंत्रवादियों के पथारूढ़ संलग्न आंदोलन के जरिये, केवल समाजवादी सर्वहारा के भीतर से ही नहीं, किसानों के प्रजातंत्रवादी जनता के भीतर से भी, निश्चय ही अधिक से अधिक तपे हुए लड़ाके निकलेंगे, जिनकी हमारे तॉलस्तॉयवादी ऐतिहासिक पाप के गढ़े में गिरने की संभावना कम से कम होगी।

Translated By

Shri Krishnadas